MJC-5 Paper II, abnormal Psychology

Topic – Criteria of Social welfare point of view of abnormality (सामाजिक कल्याण दृष्टिकोण)

सामान्य एवं असामान्य व्यक्तियों की पहचान व्यक्ति के "सामाजिक संदर्भ" (Social frame of reference) में करना उपयुक्त प्रतीत होता है। इस दृष्टिकोण के आधार पर व्यक्ति का जो व्यवहार समाज द्वारा स्थापित या स्वीकृत आदर्श नियम, रीति-रिवाज, प्रथा आदि के अनुरूप होता है उसे 'सामान्य' और प्रतिकूल व्यवहार को 'असामान्य' की श्रेणी में रखा जाता है। इसका प्रमुख कारण समाज के आदेश, नियम, मूल्य, रीति-रिवाज, प्रथा आदि को सामान्य समाज के परिस्थिति के अनुसार बनते हैं। जिससे सामाजिक गतिविधियाँ सामान्य एवं और सुचारु रूप से चलता है तब समाज प्रगति की ओर बढ़ता है परन्तु जब व्यक्ति का व्यवहार इन सामाजिक आदेशों के प्रतिकूल होता है तब समाज की सामान्य व्यवस्था अव्यवस्थित होकर प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो जाता है जिसके कारण समाज का विकास रुक जाता है। अतः इस प्रकार का व्यवहार सामाजिक कल्याण के लिए अहितकर होता है

परिणाम स्वरूप ऐसे प्रतिकूल व्यवहार को असामान्य की श्रेणी में रखा जाता है। इस दृष्टिकोण से समाजविरोधी या चारित्रिक दुर्बलता से संबंधित व्यवहारों के अतिरिक्त व्यक्ति के वैसे व्यवहार भी असामान्य कहे जाते हैं जिनके कारण व्यक्ति का संबंध मूल्य नहीं रहता तथा वे सामाजिक रूप से कुसमायोजन के शिकार होते हैं।

चूंकि विभिन्न देश एवं समाज की मान्य आदर्श, मूल्य, नियम आदि अलग-अलग होते हैं, अतः व्यक्ति के व्यवहार का हितकर या अहितकर होना उसके समाज विशेष पर निर्भर रहता है। अतः सामाजिक दृष्टि से हित और अहितकर व्यवहारों का निर्धारण समाज विशेष के संदर्भ में ही किया जा सकता है।

उपर्युक्त सामान्य और असामान्य व्यवहारों के संबंध में उपर्युक्त दृष्टिकोण के अतिरिक्त और भी कई दृष्टिकोण हैं जैसे moral view ~~point Pathological point of view~~ -

Kumar Patil
Maharaja College Ara-